लीची के बागानों में मधुमक्खी पालन

सुनील कुमार[1], अशोक धाकड़[2], इप्सिता सामल[3], अंकित कुमार[4] और **बिकास दास[5]**

भारत में किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए अब परंपरागत खेती के साथ-साथ सहायक व्यवसायों को अपनाना बेहद जरूरी हो गया है। इसी कड़ी में लीची के बागों में मधुमक्खी पालन एक सफल और लाभकारी मॉडल बनकर उभरा है। लीची से तैयार शहद अपनी गुणवत्ता और स्वाद की वजह से काफी लोकप्रिय है और बाजार में इसकी मांग लगातार बढ़ रही है। लीची के बागों में पुष्पण (मार्च) के समय मधुमक्खी के बक्सों (प्रति हैक्टर में 10-15 मधुमक्खी के छत्ते) को रखकर गुणवत्तापूर्ण शहद उत्पादन कर अतिरिक्त आय प्राप्त की जा सकती है।

लीची (*लीची चाइनेन्सिस सोन*), जिसे 'फलों की रानी' के रूप में जाना जाता है, उच्च व्यावसायिक मूल्य का एक महत्वपूर्ण फल वृक्ष है। यह सैपिंडेसी (सोपबेरी) कुल से संबंधित है। दक्षिणी चीन को इसका उत्पत्ति स्थान माना जाता है। इसकी खेती दुनिया के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में व्यावसायिक रूप से की जाती है। मनोहर लाल रंग, स्वादिष्ट एवं उत्कृष्ट सुगंध और उच्च पोषण मूल्य के कारण इसके फल अंतरराष्ट्रीय बाजारों में बहुत आकर्षक और लोकप्रिय होते हैं।

लीची के फलों के साथ-साथ लीची का शहद भी बहुत लोकप्रिय है और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसकी मांग लगातार बढ़ रही है। हल्के सुनहरे रंग एवं लीची की विशेष खुशबू वाले शहद की खपत अमेरिका और जर्मनी सहित कई यूरोपीय देशों में बढ़ गई है तथा यह शहद दुनियाभर में अपनी अलग पहचान बना रहा है। लीची उत्पादन में परागण एक महत्वपूर्ण क्रिया है, क्योंकि फल की उपज और गुणवत्ता दोनों परागण की सीमा पर निर्भर होते हैं। लीची एक परपरागित फसल है। लीची में मुख्य रूप से परागण मधुमक्खी द्वारा किया जाता है।

लीची में पुष्पण के समय मधुमक्खियों द्वारा परागण

लीची के पुष्पक्रम (पेनिकल) में खिले हुए फूल

पुष्पण (मार्च) के समय लीची के बागों में मधुमक्खी के बक्सों (प्रति हैक्टर में 10-15 मधुमक्खी के छत्ते) को लगाने से उपज में लगभग 20-30 प्रतिशत तक की वृद्धि होती है। इसके अलावा मधुमक्खियां न केवल शहद

[1]वैज्ञानिक (फल विज्ञान); [2]वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (फल विज्ञान); [3]वैज्ञानिक (कीट विज्ञान); [4]वैज्ञानिक (कृषि संरचना एवं प्रसंस्करण अभियांत्रिकी); [5]निदेशक, भाकृअनुप-राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र, मुजफ्फरपुर, बिहार

लाभ

लीची से शहद निकालने का समय मुश्किल से 1 महीने का होता है। इतने ही दिनों में दो से तीन बार शहद निकाला जाता है। मुख्य रूप से मार्च माह में ही लीची से शहद का उत्पादन मधुमक्खी पालक करते हैं। लीची के पुष्प-गुच्छ अथवा मंजर में 10% फूलों के खिलने के बाद प्रभावी परागण के लिए मधुमक्खियों का एक अहम योगदान होता है। मधुमक्खियां फूलों से पराग एकत्रित करने के समय पर परागण में मदद करती हैं। इस प्रकार मधुमक्खी के बक्से को लीची के बगीचे में रखना काफी लाभप्रद होता है।

शहद प्रसंस्करण इकाई

का उत्पादन करती हैं, बल्कि बड़ी मात्रा में मोम और गोंद का भी उत्पादन करती हैं। लीची के बागों में गुणवत्तापूर्ण शहद उत्पादन कर अधिक आय प्राप्त की जा सकती है। भारत में हर साल लगभग 1,200 से 1,500 टन लीची शहद का उत्पादन होता है।

शहद एकत्रित करती हुई मधुमक्खियां

लीची के बागों में मधुमक्खी के बक्सों (प्रति हैक्टर में 10-15) को पुष्पण (मार्च) के समय रखने से बेहतर फलन में मदद मिलती है। कई बार बागानों में छोटी काली चिड़िया लीची के फूलों में चोंच मारकर उन्हें गिरा देती हैं। लेकिन मधुमक्खियां जिन फूलों पर मंडराती हैं, चिड़ियां वहाँ नहीं आती हैं। इससे लीची के फूलों को सुरक्षित रखने में काफी मदद मिलती है। जबकि मधुमक्खियां लीची के फूलों को किसी भी तरह का कोई नुकसान नहीं पहुंचाती हैं।

सावधानियां

लीची में फूल खिलने के बाद कीटनाशी या अन्य कोई भी छिड़काव नहीं करना चाहिए। फल बनने की प्रक्रिया शुरू होते ही मधुमक्खियों के बक्सों को हटाकर ही बगीचे में समुचित छिड़काव किया जाना चाहिए। ऐसा नहीं करने पर मधुमक्खियों के मरने से नुकसान की आशंका रहती है।

लीची व्यवसाय

भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन और शहद मिशन के तहत किसानों को तकनीकी सहायता, प्रशिक्षण और सब्सिडी भी दी जाती है। इसके अलावा कृषि विज्ञान केंद्र और राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड भी सहायता प्रदान करते हैं।

विपणन हेतु तैयार लीची का शहद

मधुमक्खी पालन न सिर्फ शहद देता है, बल्कि फसलों की उपज और गुणवत्ता को भी बढ़ाता है। खासकर लीची जैसी फसलों में इसका असर सीधा दिखाई देता है। यदि आप लीची की खेती करते हैं, तो मधुमक्खी पालन मिलाकर अपनी आमदनी को दोगुना करने का यह सुनहरा मौका हाथ से न जाने दें।

भारत में लीची शहद का उत्पादन और निर्यात किसानों के लिए एक नई आय का स्रोत और देश के लिए एक निर्यात योग्य प्राकृतिक उत्पाद बनता जा रहा है। यदि वैज्ञानिक तरीके, उचित ब्रांडिंग और सरकारी सहायता को सही दिशा में इस्तेमाल किया जाए, तो यह क्षेत्र देश के शहद मिशन और कृषि आधारित उद्यमिता को मजबूती देने में बड़ी भूमिका निभा सकता है। ■

निवेदन

लेखक बंधु *फल फूल* पत्रिका के लिए अपने लेख और संबंधित फोटो, कवरिंग लैटर के साथ सिर्फ निम्न पोर्टल पर ही अपने मोबाइल नम्बर के साथ भेजें। ध्यान रखें कि फोटो मौलिक होने के साथ जेपीजे फॉर्मेट में और उच्च रेज्योल्यूशन की हों। लेख में अधिकतम 1200 शब्दों की संख्या रखने का प्रयास करें। इसके अतिरिक्त सुझाव और प्रतिक्रियाएं भी भेज सकते हैं। लेख भेजने के लिए कृपया कृतिदेव 010 टाइप फेस का प्रयोग करें।

हमारा पोर्टल है :
epatrika.icar.org.in

–संपादक